

## श्रेष्ठतम सेवा मिशन - 2022

संकल्पित दिनांक 23 दिसम्बर 2022

### द्वितीय चरण - सेवा व्यवस्था

1 जून 2022 से 31 अगस्त 2022 तक

साथियों

प्रणाम!

श्रेष्ठतम सेवा मिशन 2022 के अन्तर्गत सेवाओं को श्रेष्ठतम बनाने के लिए सेवा कार्यों को व्यवस्थाओं की दृष्टि से तीन चरणों में करना तय किया गया था, क्योंकि एक साथ सभी व्यवस्थाएँ करना असुविधा जनक हो सकता है, जिसमें तीनों चरण 3-3 महीने के क्रमशः 01 मार्च से 31 मई, 01 जून से 31 अगस्त एवं 01 सितम्बर से 30 नवम्बर तक तय किया गया था तथा शेष समय में सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को एक साथ किया जाना सुनिश्चित किया गया था। जिसका प्रथम चरण पूर्ण हो चुका है एवं प्रथम चरण की बिन्दुवार समीक्षा में जो बिन्दु अपूर्ण हैं तथा जो बिन्दु ऐसे हैं जिन पर अभी और कार्य करने की जरूरत है उन पर विशेष रूप से दूसरे चरण में भी ध्यान दिया जायेगा, साथ ही प्रथम चरण में किये गये सभी कार्यों को स्वभाव/आदत में लाया जायेगा। इसके लिए सेवाओं में जुटे सभी पदाधिकारी, सदस्य, सेवासाथी एवं सहयोगियों से निवेदन है कि प्राथमिकता के साथ सेवाओं को निर्धारित अवधि में करके श्रेष्ठतम सेवा मिशन 2022 में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें। जिससे सेवा मिशन निर्धारित अवधि में पूर्ण कर अपने दायित्व को पूर्ण किया जा सके। अतः सभी साथियों एवं सेवा साथियों से निवेदन है कि प्रथम चरण की समीक्षा बिन्दुवार करके सेवाओं को मूलभाव के अनुशार अन्तिम रूप देने का प्रयास करें तथा द्वितीय चरण के सेवा कार्यों को भी महत्व प्रदान कर सेवा मिशन के उद्देश्यों को पूर्णता की ओर ले जाने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करें।

प्रथम चरण में किये जाने वाले सेवा कार्यों का विवरण निम्नानुसार है :-

1. सेवा को स्वभाव बनायें :- प्रथम चरण में जिन सेवाओं को नियमित किया है उन्हें निरंतर जारी रखें एवं स्वभाव में लायें। जब सेवा करना स्वभाव बन जायेगा तो उससे बड़ा फायदा होगा, सेवा करनी नहीं पड़ेगी, स्वभाव बस अपने आप होती रहेगी।
2. प्रथम चरण के अधूरे कार्यों को पूरा करना :- यह भी जरूरी नहीं है कि सेवा मिशन के प्रथम चरण के सभी सेवा कार्यों को हम दक्षता के साथ कर पाये हों या करने में दक्ष हो गये हों। इसलिए प्रथम चरण के ऐसे सेवा कार्य जिन्हें हम उसके मूल भाव के अनुसार नहीं कर सके या नहीं सीख सके तो उन पर विशेष ध्यान आकर्षित करते हुए करने का प्रयास करते रहना है।
3. दैनिक सेवा प्रपत्र :- आश्रम में प्रभुजनों की आवश्यकता के अनुरूप सेवा कार्यों को कराने के लिए दैनिक सेवा प्रपत्र में अनुभव की बातें लिखी गयी हैं अगर उनका अनुसरण एवं पालन किया जाता है तो सेवाओं

एवं उनकी गुणवत्ता में काफी सहयोग मिलेगा एवं सभी सेवा कार्य सहजता से पूर्ण हो सकेंगे। तथा दैनिक सेवा प्रपत्र की पालना मिशन 2022 में महत्वपूर्ण साबित होगी।

4. सेवा कलेण्डर :- अपना घर आश्रम में सेवा कलेण्डर समय, संसाधन एवं सेवा प्रबन्धन के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है अगर इसका पालन इसके बनाने के उद्देश्य की मूल भावना के अनुरूप किया जाता है तो प्रभुजनों की सेवा के साथ-साथ संसाधनों का सही उपयोग एवं स्वयं भी खुश रह सकेंगे तथा प्रभुजनों को भी खुश रख सकेंगे।
5. कार्य-कारिणी एवं साधारण सभा :- कार्यकारिणी एवं साधारण सभाओं को निर्धारित समय पर एवं आवश्यक एजेंडा के साथ करना सेवा एवं आश्रम से सम्बन्धित हर व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है इसमें क्या सेवा करनी है, क्यों करनी है, कैसे करनी है, संसाधनों का उपयोग कैसे करना है, सेवा साथियों एवं प्रभुजनों की क्या आवश्यकताएँ हैं एवं कैसे पूर्ण हो सकती है। सभी खुश कैसे रह सकते हैं एवं कुशल प्रबन्धन कैसे हो सकता है, यह सभी निर्धारित होता है इसलिए समय पर एवं एजेंडा के साथ सभी साथियों की बैठक करना अति आवश्यक है।
6. सदस्यों एवं सहभागियों की सूची :- सदस्यों एवं सहभागियों की सूची बनायें, ब्रॉडकास्ट ग्रुप/वाटसअप ग्रुप बनायें जिस पर मासिक आधार पर रिपोर्ट/विशेष कार्य विवरण भेजना सुनिश्चित करें। जो सहयोग करते हैं उनके लिए तथा सदस्यों के लिए।
7. संसाधनों का उपयोग :- संसाधनों को समझना एवं उनका उपयोग समझना विशेष महत्वपूर्ण है अधिकतर हम केवल पैसों में ही एक-एक पैसे का हिसाब रखते हैं हमें दूसरे संसाधनों के महत्व को भी इसी प्रकार समझना होगा तथा उनका हिसाब भी इसी प्रकार रखना होगा, कुछ महत्व पूर्ण संसाधनों में सबसे महत्वपूर्ण संसाधन समय, दूसरा साथी एवं तीसरा वस्तुएँ है ये सभी पैसों से भी कीमती है लेकिन हम इनका उपयोग एवं रखरखाव पैसों के स्तर पर नहीं करते हैं जबकि और अधिक करना चाहिए। हम सभी जितना महत्व पैसों को देते हैं उपरोक्त संसाधनों को उससे अधिक महत्व देना होगा।
8. रेस्क्यू :- अपनी- अपनी जगह सभी सेवाएँ महत्वपूर्ण है लेकिन रेस्क्यू सेवा को अपना अलग ही महत्व है एवं रेस्क्यू होने वाले प्रभुजन ही हम सभी को सेवा का मौका देते हैं ऑफिस, सुपरवाइजर, कम्प्यूटर ऑपरेटर, रसोईया, भवन निर्माता, चिकित्सा से जुड़े साथी, पदाधिकारी, अधिकारी, सदस्य, सहयोगी, सभी को जोड़ देते हैं एवं सभी को सक्रिय कर देते हैं तथा ऊर्जा का प्रवाह सभी के अन्दर कर देते हैं। हमें रेस्क्यू का महत्व समझना होगा। यह अपना घर के लिए सेवा का द्वार है इसे हमेशा खुला रखें, कभी बन्द ना करें, प्रत्येक कॉल को अटेंड करें। इसे भार के साथ नहीं भाव के साथ अटेंड करें। इसमें पेट्रोल एवं पैसों का जोड़-घटाव ना लगायें। ये सब साधन अपने साथ लेकर आते हैं अपनी जेब से एक पैसा नहीं लगाना पड़ता है इसलिए रेस्क्यू विचारधारा के अनुरूप करें।
9. भण्डार गृहों का निरीक्षण :- भण्डार गृहों में जो वस्तु रखी है वह पैसों से अधिक मूल्यवान है क्यों कि पैसों के अतिरिक्त उन्हें लाने एवं रख-रखाव में और भी संसाधन लगे हैं। इसलिए हमें स्टोर का हिसाब शाम को पैसों की तरह मिलाकर जाना है एवं हर वस्तु को पैसों की तरह सुरक्षित रखना है।

अपना घर आश्रम

10. वस्तु क्रय व्यवस्था :- वस्तुओं को क्रय करते समय उनकी गुणवत्ता, दर एवं उनके श्रेष्ठतम उपयोग की अवधि, उनका उठाना, गाडी में रखना ऐसे करें जैसे वह प्रभुजी की वस्तु है और उन्हीं के लिए लेकर जा रहे हैं। आप वस्तु लेते समय केवल वस्तु ही नहीं खरीद रहे होते हैं अपना घर की विचारधारा को भी अनजाने ही समाज को दे रहे होते हैं। आपकी वस्तुओं के प्रति साज-संभाल बताती है कि आपकी सिस्टम के प्रति कितनी आस्था है और आपकी जितनी आस्था है आपके आस-पास वालों की अपने आप उतनी ही आस्था हो जाती है इसलिए हर समय सचेत रहकर ही वस्तु क्रय करें।

11. प्रभुजनों की भावनाओं का ख्याल रखना :- प्रभुजनों की भावनाओं का ख्याल रखना हमारा परम धर्म है अधिकतर प्रभुजनों की भावनाओं को किसी न किसी स्तर पर कुचला गया है या किन्हीं कारणों से कुचल गयी है और कहीं ऐसा तो नहीं कि हम भी अज्ञानता में वही कर रहे हों एवं उनकी भावनाओं का उतना ध्यान नहीं रख पा रहे हों। उन्हें छोटी-छोटी बातों पर डाटते रहते हों, अगर वह अपनी भावनाओं को विभिन्न माध्यमों से व्यक्त कर रहे हों तो हम उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की तकलीफें दे रहे हों इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रभुजन भागने का प्रयास करते हैं वह भी एक भाषा है, वह गाली देते हैं वह भी एक भाषा है, वह गुस्सा करते हैं वह भी एक भाषा है, वह आपसे बोलते नहीं हैं वह भी एक भाषा है, हमारे ऊपर थूक देते हैं वह भी एक भाषा है, वह रोते रहते हैं वह भी एक भाषा है, वह हमें देखते ही पत्थर, ईंट, डण्डा उठा लेते हैं वह भी एक भाषा है कपड़े फाड़ते हैं, टी.वी. तोड़ते हैं विभिन्न तरह के नुकसान करते हैं भागने की योजना बनाते हैं और पता नहीं क्या-क्या करते हैं हम इनमें से किसी पर भी प्रतिक्रिया न करें किसी को भी अन्यथा न लें यह सोचें विचार करें कि ऐसा कैसे हो सकता है कि प्रभुजन खुश भी रहेंएँ जैसा कर रहे हैं वैसे न करें हम उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास करें। जब आप इनके अन्दर जायेंगे समझेंगे तो पता चलता है कि इन्हें कभी किसी ने समझा ही नहीं एवं समझने की कोशिश भी नहीं की। अपना घर विचारधारा भावनाओं को भी प्रधानता दें, प्रभुजन की भावनाओं एवं उनकी कहने की भाषा को समझें, जब प्रभुजी तोड़-फोड़ करते, मारपीट करते हैं, भागने की कोशिश करते तो वह उनकी भाषा होती और वह वैसा करने से सोचते हैं कि हमें राहत मिलेगी। उन्हें राहत देने पर हमेशा ध्यान केन्द्रित करें। उनके खाने, पीने, पहनने, बात करने, दवाएँ देने, आवास आदि उपलब्ध कराते समय उनकी भावना एवं आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखने की हर समय आवश्यकता होती है।

निवेदन है श्रेष्ठतम सेवा मिशन के द्वितीय चरण में उपरोक्त सभी को ध्यान से करने एवं आचरण में लाने का प्रयास करें।

X ————— X

व्यक्ति